❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 47, अंक 28
एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 27 मई, 2024
से रविवार 2 जून, 2024
विक्रमी सम्वत् 2081
सृष्टि सम्वत् 1960853125
दयानन्दाब्द : 201 पृष्ठ : 8
वार्षिक शुल्क : 250 रुपये
दूरभाष: 23360150
ई-मेल :
aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें -
www.thearyasamaj.org/aryasandesh

41वें आठ दिवसीय वैचारिक क्रान्ति शिविर का उद्घाटन सम्पन्न : 1 जून 2024 को होगा दीक्षान्त समारोह

उज्ज्वल है आर्यसमाज का भविष्य-विश्व में गुंजायमान होगा महर्षि दयानन्द का जय-जयकार - सुरेन्द्र कुमार आर्य

आर्य समाज के विश्व व्यापी संगठन के अन्तर्गत भारत के कोने-कोने में और विदेशों में सर्वत्र वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों का लगातार प्रचार, प्रसार और विस्तार किया जा रहा है। इस क्रम में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा इकाई अखिल भारतीय दयानंद सेवा श्रम संघ द्वारा गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी 41वें 8 दिवसीय वैचारिक क्रान्ति शिविर का भव्य उद्घाटन 24 मई 2024 को आर्य समाज रानी बाग में संपन्न हुआ।

इस अवसर पर दयानंद सेवा श्रम संघ के प्रधान एवं जेबीएम ग्रुप के चेयरमैन श्री सेुरेन्द्र कुमार आर्य जी का संघ के अधिकारियों द्वारा स्वागत किया गया। श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी ने वैचारिक क्रान्ति शिविर के उद्देश्यों की सफलता और सकारात्मक प्रभाव की सराहना करते हुए सभी पदाधिकारियों को बधाई दी। विभिन्न राज्यों से पधारे लगभग 250 शिवरार्थियों का उत्साहवर्धन करते हुए

- *शेष पृष्ठ 4 पर*

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत

41वां वैचारिक क्रान्ति शिविर भव्य समापन एवं दीक्षान्त समारोह

शनिवार 1 जून , 2024 सायं: 4:00

डॉ. अम्बेडकर इंटरनेशनल सैन्टर, जनपथ, नई दिल्ली

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश के अन्तर्गत

चरित्र निर्माण, आत्मरक्षा एवं शाखा संचालन प्रशिक्षण समापन समारोह

रविवार 2 जून, 2024 सायं : 4:30 बजे

एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग, नई दिल्ली

दिल्ली के समस्त आर्यजनों से निवेदन है कि दोनों कार्यक्रमों में अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर देश के विभिन्न वनवासी क्षेत्रों से पधारे आर्य कार्यकर्ताओं एवं आर्यवीरों का उत्साहवर्धन कर आशीर्वाद प्रदान करें।

निवेदक

सुरेन्द्र कुमार आर्य, प्रधान; जोगेन्द्र खट्टर, महामन्त्री; आचार्य दया सागर, मु. शिविर संयोजक — अ. भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ

जगवीर आर्य, संचालक; बृहस्पति आर्य, महामन्त्री 9990232164; सुन्दर आर्य, कोषाध्यक्ष 9899008054

धर्मपाल आर्य, प्रधान; विनय आर्य, महामन्त्री — दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

सत्यानन्द आर्य, संरक्षक; अशोक मेहतानी, जीतेन्द्र बनाती — आर्य समाज पंजाबी बाग; बृजेश आर्य, अधिष्ठाता — एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल पंजाबी बाग

विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) के अवसर पर करें पर्यावरण संरक्षण में सहयोग

2 से 5 जून तक आर्यसमाजें एवं आर्य संस्थाएं अधिकाधिक सार्वजनिक स्थानों पार्कों, सड़कों,

चौक-चौराहों, सोसायटियों में करें पर्यावरण शुद्धि यज्ञ एवं वृक्षारोपण

आप सबसे निवेदन है कि ★ आप जहां पर्यावरण शुद्धि यज्ञ करवाएं वहां के फोटो व्हाट्सअप नं. 6390075900 पर भेजें और सोशल मीडिया पर प्रसारित करें। ★ पर्यावरण शुद्धि यज्ञों की वीडियो रिकार्डिंग/आर्यसन्देश टीवी चैनल पर प्रसारित करवाने के लिए 9540944958 पर सम्पर्क करें ★ अपनी आर्य समाजों में यज्ञ कुण्ड एवं यज्ञ पात्रों के दो तीन सैट, यज्ञ पुस्तकें, हवन सामग्री, समिधा का पर्याप्त स्टाक रखें ताकि यदि कोई महानुभाव अपने यहां यज्ञ करवाना चाहें तो वह आप से सम्पर्क करके करवा सके। ★ इस अवसर पर यज्ञ में उपस्थित जनसामान्य लोगों को यज्ञ के लाभ के पत्रक बांटे जा सकते हैं।★ समाज के बाहर एक बोर्ड भी लगावें कि प्रत्येक अवसर पर यज्ञ करवाने की व्यवस्था है ★ सम्पर्क में अपने पुरोहित जी का नाम व मो. नं. भी अवश्य लिखें। ★ यज्ञों हेतु प्रचारक प्रकल्प से पुरोहित आदि का सहयोग प्राप्त करने के लिए 9350183335 से सम्पर्क करें।- *संयोजक*

देववाणी-संस्कृत

मायावी की माया द्वारा ही उसका नाश

वेद-स्वाध्याय

मायाभिरिन्द्र मायिनं त्वं शुष्णमवातिरः।
विदुष्टे तस्य मेधिरास्तेषां श्रवांस्युत्तिर।। - ऋ० 1/11/7
ऋषिः जेता माधुच्छन्दसः।। देवता - इन्द्रः।। छन्दः विराडनुष्टुप्।।

शब्दार्थ - इन्द्र = हे परमेश्वर! **त्वम्** = तुम **मायिनम्** = मायावाले, बड़े कपटी **शुष्णम्** = शोषण करनेवाले राक्षस को **मायाभिः** = मायाओं द्वारा ही **अवातिरः** = नीचे कर देते हो, विनष्ट कर देते हो। **ते** = तुम्हारे **तस्य** = उस रहस्य को **मेधिराः** = मेधावाले ज्ञानी लोग ही **विदुः** = समझते हैं, तुम अब **तेषाम्** = उनके **श्रवांसि** = अन्नों को, सत्त्वों को, यशों को **उत्तिर** = ऊँचा कर दो, उनका उद्धार कर दो।

विनय-हे परमेश्वर! तेरे इस संसार में शुष्ण असुर भी उत्पन्न हुआ करता है। यह वह मनुष्य व मनुष्यसमूह होता है जो दूसरों के शोषण पर, चूसने पर, अपना निर्वाह करता है। यह बड़ा मायावी होता है। यह दूसरों के रक्त का शोषण बड़ी गहरी माया से, बड़े छल-कपट से करता है। यह ऐसे प्रबन्ध से काम करता है, ऐसा ढंग रचता है कि हमें अपना कुछ भी अनिष्ट होता हुआ पता नहीं लगता, किन्तु चुपके-चुपके हमारे सब सत्त्व, सब विद्या, सब सम्पत्ति का अपहरण होता चला जाता है। इसकी माया के अच्छी प्रकार फैल जाने पर तो यह अवस्था आ जाती है कि इस शुष्ण असुर के शिकार हुए लोग ऐसे मुग्ध हो जाते हैं कि वे स्वेच्छा से, प्रसन्नता से, अपने को चुसवाते, शोषित करवाते जाते हैं, परन्तु हे इन्द्र! तू इस मायावी महा-असुर को मायाओं द्वारा ही विनष्ट कर देता है। तेरा जगद्विधान इतना सच्चा और परिपूर्ण है कि इसमें माया की अपने-आप प्रतिक्रिया होती है, माया अपनी प्रतिद्वन्द्वी माया को पैदा कर अपना आत्मघात कर लेती है। चालें चलनेवाला आखिर अपनी चालों से ही मारा जाता है। तेरी सच्ची माया (प्रज्ञा) के सामने शुष्ण की झूठी माया विलीन हो जाती है, पर तेरे इस सृष्टि के रहस्य को, तेरे इस सामर्थ्य को, विरले मेधावाले ज्ञानीजन ही जानते हैं। शेष साधारण लोगों को तो जब इस भयंकर शोषण का पता लगता है तो वे घबरा उठते हैं और समझने लगते हैं कि इस संसार में कोई इन्द्र नहीं, परमेश्वर नहीं, कोई गरीबों की आह सुननेवाला नहीं, किन्तु ये 'मेधिर' लोग श्रद्धा-भरी आँखों से तेरी ओर देखते हुए अपना काम करते जाते हैं, पर हे इन्द्र! अब तो बहुत देर हो चुकी, शुष्ण राक्षस का उपद्रव पराकाष्टा को पहुँच चुका। पीड़ितों की सुधि तुम और कब लोगे? ये देखो, चुसते-चुसते अब यहाँ क्या बचा है? मेधावी लोग अब एकमात्र तुम्हारी ओर टकटकी लगाये देख रहे हैं। अब तो तुम छिनते जाते गरीबों के पेट के अन्नों का उद्धार कर दो, नष्ट होते जाते उनके सत्त्वों का रक्षण कर दो। शुष्ण की माया को छिन्न-भिन्न करके इससे ढके पड़े सज्जनों के यज्ञों को फिर सुप्रकट कर दो। प्रभो! अब तो हद हो चकी है। हे इन्द्र! तुम्हारा इन्द्रत्व और किस समय के लिए है?

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

ग्लोबल वार्मिंग एवं विश्व पर्यावरण दिवस

वेद का मार्ग ही पर्यावरण को बचा सकता है

.....वेदों में वृक्ष लगाना परम आवश्यक मानकर वृक्षारोपण का स्पष्ट आदेश दिया है। "वनस्पति वन आस्थापयध्यम्" अतः वृक्षों को नष्ट करना ही पृथ्वी माता की हिंसा करना है। उसके हृदय पर प्रहार करने जैसा है। वेदों को आदर्श मानकर हमें पृथ्वी तत्व का संरक्षण करना है। तीसरा "जल ही जीवन है" यह आपने कई बार सुना होगा जल जीवन का प्रमुख आधार है। इस संदर्भ में वेदों में बहुत पहले ही सचेत किया था कि जल के द्वारा समस्त रोगों एवं कष्टों का निवारण किया जा सकता है। जल ही सम्पूर्ण जगत/संसार की प्रतिष्ठा है। "आपो हि सर्वस्व जगतः प्रतिष्ठा" वैदिक ऋषियों का मानना है कि जल से ऊर्जा उत्पन्न होती है। अथर्ववेद में सभी प्रकार के जल की स्वच्छता एवं सुरक्षा बनाये रखने के लिए प्रार्थना की है। वर्षा का जल, कुँए का जल, समुद्र का जल और धरती से स्वयं प्रस्फुटित जल हम सभी के लिए कल्याणकारी है। पर्यावरण के घटक जल को प्रदूषण से रोकने के लिए वैदिक ऋषियों ने जल को भी देवत्व की संज्ञा दी, जल ही स्वयं देव है ऐसा कहकर सामान्य मानव के अन्तः करण मे भी जल के लिए आदर सम्मान एवं सुरक्षा उत्पन्न करने के प्रयास किये।.....

भीषण चक्रवाती तूफान में तब्दील हो चुके 'रेमल' ने पश्चिम बंगाल के तटों पर दस्तक दी, इसके चलते जमकर तबाही की खबरें हैं। देश के कई राज्यों में गर्म हवाओं और भीषण गर्मी और लू की वजह से मौतों का सिलसिला लगातार बढ़ता ही जा रहा है। लू प्रभावित 23 राज्यों खासकर राजस्थान, आंध्र प्रदेश, छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल में मौत के आंकड़ों में तेजी आनी शुरू हो गई है। रिपोर्ट बता रही है कि देश में हर साल होने वाली 7 लाख 40 हजार मौतों की वजह तापमान है। ये मौतें या तो अधिक गर्म तापमान के कारण हो रही हैं या इसकी वजह ठंडा तापमान है। लैंसेट जर्नल की रिपोर्ट कहती है, ठंडे तापमान के कारण भारत में हर साल 6,55,400 मौतें होती हैं। वहीं, गर्मी के कारण 83,700 लोग दम तोड़ देते हैं।

इसके अलावा वैश्विक तापमान में वृद्धि से तूफान, बाढ़, जंगल की आग, सूखा और लू के खतरे की आशंका बढ़ जाती है। जिसे विज्ञान जगत ग्लोबल वार्मिंग या वैश्विक तापमान में वृद्धि बता रहे है। विज्ञान का मानना है कि ग्लोबल वार्मिंग औद्योगिक क्रांति के बाद से औसत वैश्विक तापमान में वृद्धि हुई है। 1880 के बाद से औसत वैश्विक तापमान में लगभग एक डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हुई है। वैज्ञानिकों को आशंका है कि 2035 तक औसत वैश्विक तापमान अतिरिक्त 0.3 से 0.7 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ सकता है।

सवाल बन जाता है आखिर आने वाले समय में इन्सान कैसे जीवित रहेंगे? उधोग धंधे कल कारखानों से उत्पन्न गर्मी का सामना कैसे किया जायेगा? और इसका जवाब है वैदिक पद्धति या वेदों के अनुसार! हालाँकि कुछ लोग इसे नकार सकते हैं, अंधविश्वास बोल सकते हैं किन्तु अगर गहराई से अध्ययन किया जाये तो पूरा मामला समझ आ जायेगा। क्योंकि मामला पर्यावरण के बदलाव से जुड़ा है और पर्यावरण को हमारे ऋषि-मुनियों ने बेहतर तरीके से समझा जाना और अंत में पर्यावरणीय शिक्षा वेदों में दी। क्योंकि पर्यावरण शब्द परि और आवरण दो शब्दों से मिलकर बना है जहाँ परि का अर्थ है चारों ओर तथा आवरण का अर्थ है आच्छादित या ढका हुआ या घिरा हुआ। पर्यावरण की इस परिधि में वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी तथा समस्त दिशाएं, पर्वत, मेघ, वनस्पति पशु आदि समाहित हैं। वेद में पर्यावरण संरक्षण- हमारे वैदिक विज्ञान में हमें पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित किया गया है। पर्यावरण के प्रति प्रत्येक मानव को सचेत किया गया है। जिसे भूलकर आज हम दूसरे मार्गों पर चल निकले नतीजा हजारों लोग इसका शिकार हो रहे है। अथर्ववेद संहिता में पृथ्वी को माता कहकर पुकारा है तथा मानव को उसका पुत्र कहा है। अर्थात् पुत्र जैसे अपने माता-पिता की रक्षा यत्नपूर्वक करता है उसी प्रकार धरती रूपी माता की भी रक्षा मानव को यत्न पूर्वक करनी चाहिए। अथर्ववेद इसके अधिक दोहन न करने के लिए संकेत देता है। जबकि आज का मानव हर परिस्थिति में लाभ पाना चाहता है। वह चाहता है कि धरती का अधिक से अधिक दोहन कर लिया जाये इसके भीतर या बाहर जो कुछ भी अमूल्य वस्तुएं हैं। उन सबको धरती से छीन लिया जाये। परन्तु अथर्ववेद की ऋचाएं पृथ्वी के दोहन के लिए निषेध करती हैं।

वेद कहता है कि शिला, भूमि, धूल और पत्थर इनके रूपों को पृथ्वी धारण करती है। यह सब धारण करने वाली पृथ्वी को मैं प्रणाम करता हूँ। दरअसल आज भूजल दोहन से लेकर भयंकर तेजी से पेड़ काटे जा रहे हैं। इसके कई नुकसान हैं, यह जल चक्र को प्रभावित करता, यह वनस्पतियों और जीवों को नष्ट कर देता है, इससे कार्बन डाइऑक्साइड में वृद्धि होती है, जिससे ग्लोबल वार्मिंग बढती है और तो और पेड़ों को काटने से जानवरों और पक्षियों के आवास नष्ट हो जाते हैं, इसी कारण वृक्षों के काटे जाने पर भी वेदों ने निषेध किया है। चूंकि वृक्ष भी पर्यावरण संरक्षण की भूमिका निभाते हैं। यहाँ तक कि वृक्षों की रक्षा के लिए वृक्षों को हमारी आस्था और संस्कृति से जोड़कर उनमें दैवत्व का भान कराया है। वेद के अनुसार वृक्ष और वनस्पतियों पर्यावरण संरक्षण के लिए परम आवश्यक हैं, वृक्षों को देवरूप मानकर वैदिक ऋषियों ने इन वृक्षों की अनेक प्रकार से स्तुति की है।

वेदों में वृक्ष लगाना परम आवश्यक मानकर वृक्षारोपण का स्पष्ट आदेश दिया है। "वनस्पति वन आस्थापयध्यम्" अतः वृक्षों को नष्ट करना ही पृथ्वी माता की हिंसा करना है। उसके हृदय पर प्रहार करने जैसा है। वेदों को आदर्श मानकर हमें पृथ्वी तत्व का संरक्षण करना है। तीसरा "जल ही जीवन है" यह आपने कई बार सुना होगा जल जीवन का प्रमुख आधार है। इस संदर्भ में वेदों में बहुत पहले ही सचेत किया था कि जल के द्वारा समस्त रोगों एवं कष्टों का निवारण किया जा सकता है। जल ही सम्पूर्ण जगत/संसार की प्रतिष्ठा है। "आपो हि सर्वस्व जगतः प्रतिष्ठा" वैदिक ऋषियों का मानना है कि जल से ऊर्जा उत्पन्न होती है। अथर्ववेद में सभी प्रकार के जल की स्वच्छता एवं सुरक्षा बनाये रखने के लिए प्रार्थना की है। वर्षा का जल, कुँए का जल, समुद्र का जल और धरती से स्वयं प्रस्फुटित जल हम सभी के लिए कल्याणकारी है। पर्यावरण के घटक जल को प्रदूषण से रोकने के लिए वैदिक ऋषियों ने जल को भी देवत्व की संज्ञा दी, जल ही स्वयं देव है ऐसा कहकर सामान्य मानव के अन्तः करण मे भी जल के लिए आदर सम्मान एवं सुरक्षा उत्पन्न करने के प्रयास किये।

इसी तरह वैदिक परम्परा के अनुसार पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त करने के लिए पर्यावरण के घटक अग्नि तत्व की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। जिस प्रकार से हमारा शरीर तेज तत्व के बिना सार हीन है उसी प्रकार बाह्य जगत भी अग्नि तत्व के बिना उदासीन है। अग्नि तत्व का पर्यावरण के शोधन में विशेष योगदान है। वैदिक ऋषियों

- जारी पृष्ठ 7 पर

महर्षि की 200वीं जयन्ती पर आर्यसमाज द्वारा राष्ट्रहित में उठाए गए मुद्दों की श्रृंखला में

5

देश, धर्म, संस्कृति और संस्कारों को लेकर उत्पन्न हुई चुनौतियों का चिन्तन

हमारी सन्तान ही - हमारी असली सम्पत्ति

.....बच्चे कोई भी चीज अपने बड़ों को देखकर ही सीखते हैं, इसी में उनका फोन चलाना भी शामिल है। हालात ये हो चुके हैं कि आजकल रोते हुए बच्चे को चुप कराने के लिए मां-बाप उसे खिलौने की बजाय मोबाइल फोन पकड़ा देते हैं। सालभर के बच्चों को भी फोन की भयानक लत लग चुकी है। दूसरा अक्सर जब बच्चे मोबाइल का प्रयोग करते हैं हम यह सोचकर खुश होते हैं कि चलो कुछ देर उसे खेलने भी दिया जाना चाहिए। लेकिन वह खेल नहीं रहा है, ध्यान से देखिये वह सिर्फ बैठा है और उसके दिमाग से कोई और खेल रहा है। उसका चेहरा ध्यान से देखिये! कई बार वह हिंसक होगा, कई बार अवसाद में जायेगा। .....

सत्य घटनाओं पर आधारित यह लेख पुस्तक में दिया गया क्यू. आर. कोड स्कैन करके स्वयं पढ़ें और दूसरों को भी पढ़ाएं।
पुस्तक प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.), 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150, मो. 09540040339
ऑन लाइन खरीदें : www.vedicprakashan.com

अगर आज हम बहुत ध्यान से सोचने के लिए बैठें कि हमारी सबसे कीमती चीज क्या है? तो क्या उत्तर आएगा पैसा, सोना-चांदी-जेवर, मकान, जमीन, बच्चे और परिवार?

नाव डूब रही है, पैसा और बच्चे साथ हैं, किसे उठाओगे? पैसे या बच्चों को? चोर घर आ गए सोना-चांदी चुराना चाहते हैं, किसे बचाओगे जेवर को या बच्चों को? मकान में आग लग गई, किसे बचाने की मेहनत करेंगे, मकान को या बच्चों को?

उत्तर मिला? सब का उत्तर होगा, बच्चों को।

यह एक ऐसी वास्तविकता है जिस पर हमें सोचने के लिए रुकना पड़ेगा और अपनी कार्यशैली (वर्किंग) पर कुछ जरूरी परिवर्तन करना पड़ेगा।

पहले किसी बुजुर्ग से पूछा जाता था कि ताऊ जी आपके पास कितनी सम्पत्ति है तो वह कहता था दो बेटे और तीन बेटीयां, आज किसी से पूछो तो कहते हैं तीन फ्लैट, चार दुकानें।

जब हमारी सम्पत्ति बदली तो हमारी प्राथमिकताएं भी उसके साथ बदल गई, पहले परिवार में 4-5 बच्चे होते थे। सभी से माता-पिता से आत्मीयता का गहरा सम्बन्ध होता था। सब पर बहुत बारीक नजर होती थी। आज एक या दो बच्चे हैं, उनके बारे में भी कई बार हमें सही जानकारी नहीं होती, क्यों?

आपका सोना (गोल्ड) कहां रखा है, सुरक्षित है या नहीं, आपको मालूम है, आपके शेयर का क्या रेट है, बढ़ेंगे या घटेंगे, रियल टाइम की जानकारी आपको है, जमीन के क्या भाव हो गये, आपको मालूम है, पर हमारे बच्चे कहां जा रहे हैं, क्या सीख रहे हैं, क्या खा रहे हैं, क्या पी रहे हैं, हमें जानकारी कुछ कम है और इस स्थिति का परिणाम हमारे सामने ही है।

मैं शेयर बाजार पर तो नजर रखता हूँ—शेयर बढ़ गया या घट गया, पर दुनिया के बाजार में (समाज में) मेरे बच्चे को क्या सिखलाया जा रहा है उस पर मेरी नजर नहीं रह पाती, यानि असली पूंजी पर ध्यान नहीं है, आइये, इस पर गंभीरतापूर्वक विचार करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास (चैप्टर) में लिखते हैं कि—''माता-पिता की सबसे बड़ी जिम्मेदारी अपनी सन्तान को संस्कारवान, धर्मात्मा, गुणवान-विद्यावान बनाकर राष्ट्र को समर्पित करना है।'' जानने के लिए विस्तार से पढ़ सकते हैं।

एक उदाहरण देखिये—मेट्रो ट्रेन में एक महिला किताब पढ़ रही थी। उसकी बगल में उसकी छोटी बच्ची भी एक किताब लिए बैठी थी। एक अजनबी यात्री ने महिला से सवाल किया कि आज की भागदौड़ भरी जिन्दगी में आप अपनी बेटी को सही शिक्षा दे रही हैं। इस पर महिला मुस्कुराई और बोली मैं शिक्षा नहीं दे रही हूँ, बच्चे हमें ही देखकर सीखते हैं, वही करते हैं, जो हम करते हैं। अगर मेरे हाथ में मोबाइल होता तो बच्ची भी मोबाइल की डिमांड करती, अब मेरे हाथ में पुस्तक है तो वह भी पुस्तक मांगने लगी है, बस!

गलत कार्यों के प्रति रुचि वास्तविकता में तभी पैदा होती है जब हम बच्चों को खुद के मार्गदर्शन में नहीं बल्कि किसी और के मार्गदर्शन में छोड़ देते हैं, खासकर उनके जिनके बारे में हमें बिल्कुल भी पता नहीं कि वो बच्चों के लिए फ्री कार्टून क्यों परोस रहे हैं? कभी सोचा है हमने?

कुछ और देखिये—इसके विपरीत थोड़े समय पहले दिल्ली से सटे ग्रेटर नोएडा में एक 15 वर्ष के बच्चे ने एक ही रात में दो कत्ल किए थे। एक कत्ल अपनी सगी माँ का और दूसरा अपनी सगी बहन का। ये दोनों कत्ल बच्चे ने क्रिकेट बैट से पीट-पीट कर किये थे। कत्ल करने की वजह क्राइम फाइटर गेम को बताया गया था। क्योंकि बहन ने शिकायत कर दी थी कि भाई दिन भर मोबाइल फोन पर गेम खेलता रहता है और इसलिए माँ ने बेटे की पिटाई की, उसे डांटा और उसका मोबाइल फोन छीन लिया था। आवेश में आकर बच्चे ने ये दो कत्ल किये थे।

एक दूसरी घटना राजस्थान के जोधपुर से सामने आई थी। यहां छोटे भाई द्वारा बड़े भाई का मोबाइल डेटा खत्म कर देना इतना नागवार गुजरा कि उसने अपने छोटे भाई के सीने में कई बार चाकू मारकर बेरहमी से हत्या कर दी थी। तीसरी घटना लखनऊ से है, यहाँ बेटे ने मोबाइल के लिए माँ का कत्ल कर दिया था।

एक के बाद एक कई ऐसी घटनाओं के बाद सवाल बना कि आखिर बच्चों को कैसे संस्कार दिए जाये, उनका मार्गदर्शन कैसे हो? वैसे देखा जाये तो माता-पिता बच्चों के पहले मार्गदर्शक होते हैं। समाज उनकी दूसरी पाठशाला माना जाता है। किन्तु पिछले कुछ सालों से एक तीसरा मार्गदर्शक तैयार हो गया है, जो बच्चों को अपने तरीके से हैंडल कर रहा है। यानि बच्चा आपका, लेकिन उसकी सोच, उसका दिमाग, उसके संस्कार कोई और तय कर रहा है और ये मार्गदर्शक है इंटरनेट, मोबाइल फोन, जो किसी खतरनाक नशे की तरह बच्चों के दिमाग पर हावी हो रहा है।

देखा जाये तो कोरोना से पहले बच्चे मोबाइल की डिमांड करते थे तो परिवार कह देता था कि पहले पढ़ाई करो फिर मोबाइल लेना। किन्तु कोरोना महामारी और उसके बाद ऑनलाइन क्लास ने हर बच्चे के हाथ में मोबाइल थमा दिया। इसे ऐसे भी समझ सकते हैं कि कोरोना के बाद से बच्चों का स्क्रीन टाइम बहुत ज्यादा बढ़ गया कि अब यह उनकी आदत से ज्यादा, लत बन चुका है। क्योंकि बच्चों में यह विशेषता होती है कि जो सामने होता है वह उसी बात को सच मान लेते हैं। उन्हें सच और भ्रम के बीच तुलना करने की बौद्धिक क्षमता नहीं होती। इसीलिए जब भी बच्चे गेम खेलते हैं तो वे उस गेम के अंदर चले जाते हैं और अपने आपको उस गेम का एक किरदार मानने लगते हैं। जिस तरह से उस गेम या खेल में घटनाएं होती हैं बच्चे भी उसी तरह का बर्ताव करते नजर आते हैं।

अभी ऊपर आपने देखा, बच्चे कोई भी चीज अपने बड़ों को देखकर ही सीखते हैं, इसी में उनका फोन चलाना भी शामिल है। हालात ये हो चुके हैं कि आजकल रोते हुए बच्चे को चुप कराने के लिए मां-बाप उसे खिलौने की बजाय मोबाइल फोन पकड़ा देते हैं। सालभर के बच्चों को भी फोन की भयानक लत लग चुकी है। दूसरा अक्सर जब बच्चे मोबाइल का प्रयोग करते हैं हम यह सोचकर खुश होते हैं कि चलो कुछ देर उसे खेलने भी दिया जाना चाहिए। लेकिन वह खेल नहीं रहा है, ध्यान से देखिये वह सिर्फ बैठा है और उसके दिमाग से कोई और खेल रहा है। उसका चेहरा ध्यान से देखिये! कई बार वह हिंसक होगा, कई बार अवसाद में जायेगा। कई बार जब उसके पास मोबाइल नहीं होगा वह परिवार के बीच रहते हुए भी खुद को अकेला महसूस करेगा। वह एक अनोखे संसार में जीने लगता है। माता-पिता से ज्यादा गेम के पात्र उसके हीरो हो जाते हैं। जब किसी कारण परिवार के लोग उसे इससे दूर करते हैं वह हिंसक हो जाता है। घर का जरूरी सामान तोड़ने-फोड़ने के अलावा कई बार खुद के साथ और अन्यों के साथ हिंसा भी कर बैठता है।

आप बच्चे को कुछ भी सिखाएं लेकिन सच ये है कि मोबाइल में एक क्लिक पर बहुत कुछ खुल जाता है। बच्चे गेम के अलावा अलग-अलग साइट पर जाते हैं। जहां वे एक समय बाद काल्पनिक दुनिया में जीने लगते हैं। पांच साल से 12 साल की उम्र बच्चों की देखरेख के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। इस उम्र में उन्हें सुनने और समझने की बहुत ज़रूरत है।

तीसरा आज बच्चों के मनोविज्ञान को पढ़ने की आवश्यकता है। जब बच्चा अपने आपको अकेला महसूस करते हैं तभी वे इन सब आर्टीफिशियल चीज़ों के पीछे भागते हैं। बच्चा अकेले क्यों रहना चाहता है इस पर पेरेंट्स को गम्भीरता से ध्यान देने की ज़रूरत है। अभी एकल परिवार की परम्परा सी बन गई है। हम पैसा कमाने के चक्कर में बच्चों पर बहुत ध्यान नहीं दे पा रहे हैं। बात सिर्फ बच्चों के बौद्धिक विकास और हिंसा तक सीमित नहीं है यदि इससे आगे देखें तो आज इंटरनेट पर हर तरह की सामग्री उपलब्ध है। जो बात या थ्योरी उसे अपनी उम्र के एक पड़ाव के बाद मिलनी चाहिए थी वह उसे बेहद कम उम्र में मिल रही है। कौन भूला होगा नवम्बर 2017 की उस खबर को जो समाचार पत्रों के मुख्य पृष्ठों पर छपी थी कि 'दिल्ली में साढ़े चार साल के बच्चे पर साथ पढ़ने वाली बच्ची के रेप का आरोप।' आखिर एक बच्चे के पास यह जानकारी या कामुकता कहाँ से आ रही है? हो सकता है मोबाइल फोन पर कोई क्लिप आदि देखकर वह लड़का प्रेरित हुआ होगा?

- शेष पृष्ठ 7 पर

विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) पर विशेष

पर्यावरण संरक्षण का सबसे बड़ा साधन है – यज्ञ और वृक्षारोपण

आर्य समाज हमेशा से पर्यावरण संरक्षण और संवर्धन के लिए कार्य करता रहा है। प्रत्येक वर्ष 5 जून को मनाए जाने वाले पर्यावरण दिवस पर पूरे देश और विशेष रूप से दिल्ली में विभिन्न स्थानों पर पर्यावरण शुद्धि हेतु यज्ञों का आयोजन करना और कराना आर्य समाज की मुख्य गतिविधियों में से एक कलयाणकारी गतिविधि बन गई है। यूँ तो आर्य समाजों में दैनिक, साप्ताहिक और समय समय पर विशेष यज्ञों के आयोजन होते ही हैं लेकिन इस अवसर पर दिल्ली के विभिन्न पार्कों में एवं सार्वजनिक स्थलों पर वृक्षारोपण और यज्ञों के बड़े आयोजन करना आर्य समाज की कल्याणकारी परंपरा रही है।

आज संपूर्ण विश्व में बिगड़ता पर्यावरण मानव मात्र के लिए एक चिंता का विषय है। बड़े-बड़े जंगलों मे आग लग रही है, ग्लेशियर पिघल रहे हैं, साइक्लोन पर साइक्लोन आ रहे हैं, तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है, भारत की राजधानी दिल्ली में तों 52.3 डिग्री तापमान पहुंचा है, वहीं जैसलमेर में 57, बीकानेर में 55, फलोदी में 55, बाड़मेर में 52 से भी अधिक डिग्री तापमान पहुंच गया है, यह अपने आप में एक बहुत बड़ी त्रासदी का संकेत है, वृक्षों को लगातार काटा जा रहा है, जमीन से पानी निकाला जा रहा है और अनेक आधुनिक सुविधाओं में जैसे रेफ्रिजरेटर, ए.सी. की बढ़ती संख्याओं के कारण सारा वातावरण प्रदूषित होता जा रहा है। आज दुनिया के सारे पर्यावरणविद चिंतित है क्योकि प्रकृति का बिगड़ता संतुलन मानव मात्र के लिए एक बड़ा खतरा बनकर सामने खड़ा है। इसके अनेक कारणों में सबसे बड़ा कारण यह है कि जो हमारे ऋषि मुनियों ने, महापुरुषों ने हमें परोपकार के पथ पर चलने का संदेश दिया था, हम उसका अनुकरण नहीं कर रहे हैं।

महर्षि दयानंद सरस्वती जी ने अपने विभिन्न महत्पूर्ण ग्रन्थों में यज्ञ की महिमा और महत्व को दर्शाते हुए पर्यावरण संरक्षण का केन्द्र यज्ञ को बताया है। उन्होंने एक स्थान पर कहा है कि जब तक हमारे राजा महाराजा बड़े-बड़े यज्ञों का आयोजन करते रहे तब तक संपूर्ण प्रकृति कल्याणकारी बनी रही, क्योकि यज्ञ पर्यावरण संरक्षण का सबसे बड़ा साधन है, इसलिए हमारी संस्कृति यज्ञ की संस्कृति है, यज्ञ विश्व की नाभि है , जब मनुष्य की नाभि अपने स्थान से हिल जाती है, तो सारा का सारा सन्तुलन हिल जाता है, इसी तरह से पर्यावरण संरक्षण का आधार यज्ञ है। जब तक पूरी तरह से यज्ञ को हम नित्यकर्म का हिस्सा नहीं बनायेंगे, तब तक पर्यावरण संरक्षण की बात अधूरी ही रहेगी, आजकल स्थिति यह हो गई है कि हमारे घरों में ,पार्कों में और विभिन्न स्थानों पर वृक्षारोपण नहीं किया जा रहा है, जबकि वृक्ष धरती का श्रृंगार है, वृक्षों का लगाना बहुत जरूरी है, इसलिए पर्यावरण दिवस पर जहां सभी लोग यज्ञ करें, वहीं वृक्षारोपण भी अवश्य करें।

हमारे यहां प्राचीन काल में प्रतिदिन यज्ञ करने का विधान था। यज्ञ करके ही हम भोजन ग्रहण करते थे, आज सब कुछ बदलता जा रहा है, हम प्रदूषण को तो बढ़ाते जाते हैं लेकिन उसको कम करने का प्रयास ही नहीं करते, जब हम गन्दगी फैलाते हैं तो उसको स्वच्छ कौन करेगा? इसलिए यज्ञ करें और पर्यावरण को शुद्ध बनाये। यह सर्वविदित है कि जब भोपाल गैस काण्ड हुआ था तो वहां पर वही आर्य परिवार सुरक्षित रहा था कि जो प्रतिदिन यज्ञ करता था। यज्ञ का एक अपना विज्ञान है जिस पर आर्य समाज ने शोध किया है, उस शोध पत्र को अवश्य पढ़ें और यज्ञ करने-कराने का संकल्प लें, तभी हमारा पर्यावरण दिवस मनाना सार्थक होगा।

मनुष्य जितना समझदार है उतना ही लापरवाह भी है। सारे पर्यावरण को अशुद्ध करने वाला और कोई नहीं, मनुष्य ही है। मनुष्य को समझना होगा प्राणी जगत के लिए पर्यावरण को शुद्ध रखना होगा। देवपूजा संगतिकरण और दान इन कर्मो से जड़ देवता जल्दी प्रसन्न होते हैं, मतलब यज्ञ करने से ही पर्यावरण शुद्ध होगा। आज पूरी दुनिया इस बात को महसूस कर रही है कि प्रकृति के साथ जितना खिलवाड़ हो रहा है, पंचमहाभूतों की जो स्थिति लगातार बिगड़ती जा रही है, उसमें अग्नि को छोड़ दिया जाए तो जल, वायु, आकाश और पृथ्वी सब कुछ बदलता जा रहा है। आज विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर हमें यह सोचना चाहिए कि इस प्रदूषित होते वातावरण को हम किस तरह शुद्ध और कल्याणकारी बनाएं। मनुष्य की प्रवृत्ति बदलती जा रही है, मनुष्य ने यज्ञ करना बंद कर दिया है और जब तक हम यज्ञ नहीं करेंगे तब तक पर्यावरण सरंक्षण संभव नहीं होगा। आज मनुष्य मानव से दानव बनता जा रहा है, हाथी जैसे लोकोपारी पशुओं को मारने की बात और इसके साथ-साथ अनेकानेक विध्वंसकारी कार्य देखकर ऐसा लगता है कि जैसे मनुष्य केवल स्वार्थपूर्ण जीवन जी रहा है और पूरी तरह से खिलवाड़ कर रहा है उसी का परिणाम है कि आज इस तरह की मुसीबतों का सामना कर रहें हैं वेदों में जो बताया गया है कि हम यज्ञ करें और यज्ञ कराएं, मनुष्य की वाणी से और कर्म से परोपकारी बने, सदाचारी बनें तो प्रकृति भी कल्याणकारी बनेगी।

– *सम्पादक*

प्रथम पृष्ठ का शेष

उन्होंने सभी को वैदिक संस्कृति और राष्ट्र प्रेम को अपनाने का संदेश दिया। सभी आर्य समाज के अधिकारियों एवं आर्यजनों की उपस्थिति को देखकर उन्होंने प्रशंसा करते हुए कहा कि इतनी गर्मी में और इतनी संख्या में आपके आने से यह स्पष्ट हो गया है कि आर्य समाज का भविष्य अत्यन्त उज्जवल है और वह दिन दूर नहीं जब संपूर्ण विश्व में महर्षि दयानंद का जय जयकार गुंजायमान होगा।

इस अवसर पर श्री विनय आर्य जी ने बताया कि दयानंद सेवा श्रम संघ का विस्तार गोवा और सिक्कम में भी होने जा रहा है। इसी वर्ष थांदला मध्यप्रदेश में भी एक नये विद्यालय का आरम्भ होगा। श्री कीर्ति शर्मा जी ने संघ के सेवा कार्यो की सरहाना की। संघ के महामंत्री श्री जोगेन्द्र खट्टर जी ने उत्तर पूर्वी राज्यों में संघ के सेवा कार्यो का विस्तार से वर्णन किया, और शिविर में उपस्थित सुयोग्य आचार्यो और शिवरार्थियों का परिचय और स्वागत किया गया, ज्ञात हो कि इस शिविर का समापन और भव्य दीक्षांत समारोह 1 जून 2024 को सायं 4 बजे से अम्बेडकर इण्टरनेशनल सेंटर, जनपथ नई दिल्ली में आयोजित किया जायेगा, जिसमें आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

– *जीववर्धन शास्त्री, शिविर संयोजक*

41वें वैचारिक क्रान्ति शिविर के अवसर पर श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी को सम्मानित करते अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अधिकारीगण।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित वैदिक धर्म प्रचारक प्रकल्प के अन्तर्गत

सेवा बस्ती - प्रिंसेस पार्क, निकट बडोदा हाउस, नई दिल्ली में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 200वें जयंती वर्ष पर

51 कुण्डीय मंगल कामना यज्ञ सम्पन्न : प्रान्तीय सभाओं के अधिकारियों ने दिया आशीर्वाद

आर्य समाज के प्रचार-प्रसार और विस्तार के लिए समर्पित दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संवर्धक दिल्ली और एनसीआर की सेवा बस्तियों में निरंतर वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों से निर्धन लोगों को परिचित कराने का कार्य बखूबी कर रहे हैं। इस मानव कल्याण के अभियान में प्रचारक यज्ञ, सत्संग और 16 संस्कारों के कराने के साथ ही हर आयु वर्ग के लोगों को शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक रूप से सबल बनाने का प्रशंसनीय कार्य कर रहे हैं, 12 मई 2024 को नई दिल्ली के बड़ौदा हाउस के पास प्रिंसेज पार्क में भारतीय नव वर्ष के उपलक्ष्य में ''मंगल कामना यज्ञ'' समारोह के रूप में संपन्न हुआ। इस अवसर पर 51 यज्ञ कुण्डों पर 58 परिवारों ने एक साथ यज्ञ में आहुति दी। 10 वृद्धजनों को संमानित किया गया। आचार्य दिनेश शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यह यज्ञ अत्यन्त सफल सिद्ध हुआ।

इस कार्यक्रम में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के उप-प्रधान श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी, महामंत्री श्री विनय आर्य जी, श्री राकेश आर्य जी, श्री बृहस्पति आर्य जी एवं अनेक प्रान्तीय सभाओं के अधिकारियों ने यजमानों को तथा उपस्थित लोगों को आशीर्वाद दिया। सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने अपने विशेष उद्बोधन में संतानों का माता-पिता के प्रति और माता-पिताओं का संतानो के प्रति क्या कर्तव्य हैं? इस विषय पर प्रेरक विचार प्रस्तुत किये। इस यज्ञ के 15 संयोजकों को महर्षि दयानंद का चित्र भेंट कर सम्मानित किया गया। प्रेम सौहार्द के वातावरण में कार्यक्रम संपन्न हुआ।

दिल्ली सभा के अन्तर्गत भीषण गर्मी में स्वास्थ्य जागरुकता अभियान हुआ तेज

दिल्ली की सेवा बस्तियों में स्वास्थ्य जागरुकता सेवा अभियान से लाभ प्राप्त कर रहे हैं प्रतिदिन सैकड़ों लोग

एम्बुलेंस के माध्यम से झुग्गी-झोपड़ियों में जा-जाकर की जा रही है, निर्धन रोगियों की नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच

दिल्ली की समस्त आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं की नियंत्रक शिरोमणि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा राष्ट्र सेवा एवं मानव निर्माण के सैकड़ों प्रकल्प गतिशील हैं। सभा द्वारा संचालित सेवा समर्पण के इस अनुक्रम में स्वास्थ्य जागरुकता सेवा से प्रतिदिन सैकड़ों गरीब लोग लाभ प्राप्त कर रहे हैं। इस महत्वपूर्ण योजना का उद्देश्य है कि दिल्ली की उन समस्त सेवा बस्तियों में जहां निर्धन, मजदूर लोग रहते हैं, जहां पर छोटे-छोटे झुग्गी झोपड़ी हैं, साफ सफाई भी नाम मात्र के लिए ही है, वहाँ इस भीषण गर्मी के मौसम में सभा की एंबुलेंस और पूरी स्वास्थ्य जागरूकता सेवा की टीम दिल्ली में जगह-जगह पर झुग्गी बस्तियों में निशुल्क स्वास्थ्य जांच करती है, जिसमें शुगर, बी. पी., हीमोग्लोबिन, आक्सीजन, प्लस, वजन, लम्बाई की जांच कर तुरंत रिपोर्ट दी जाती है।

वस्तुत: आधुनिक परिवेश में उत्तम स्वास्थ्य अपने आप में एक बड़ी चुनौती है। उस पर भी भारत की राजधानी दिल्ली का प्रदूषित वातावरण, झुग्गी- झोपड़ी में रहने वाले निर्धन मजदूरों को जो रोज कमाते और खाते हैं, जहां हवा, पानी, भोजन आदि सब बहुत कम स्वच्छ होता है। ऐसे में वहां पर बीमार लोग अपनी दिहाड़ी मजदूरी से छुट्टी न मिलने के कारण बिना स्वास्थ्य परीक्षण के लक्षणों के आधार पर दवा खाकर ज्यादा बीमार हो जाते हैं। इन सभी समस्याओं और पीड़ाओं को ध्यान में रखते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिल्ली की समस्त सेवा बस्तियों में स्वास्थ्य जागरुकता सेवा अभियान के माध्यम से सभा की एम्बुलेंस और स्वास्थ्य जागरुकता की पूरी टीम जगह-जगह स्वास्थ्य परीक्षण का कार्य कर रही है। जिससे निर्धन रोगियों की बीमारी की सही जांच और उपचार संभव हो सके। इस का यह स्वसस्थ्य सेवा यज्ञ लगातार विस्तृत हो रहा है और सेवा कार्य में सभा को लगातार सफलता प्राप्त हो रही है।

- संयोजक

साप्ताहिक स्वाध्याय

सुधार की तीसरी दशा

(सन् 1870 से 1875 तक)

गतांक से आगे -

धीरे-धीरे महर्षि दयानन्द जी के सुधार कार्य ने अपनी तीसरी दशा में प्रवेश किया। समाज सुधारक के विचार पहले से ही विस्तृत थे, अनुभव के अधिक बढ़ने के साथ उनका क्रियात्मक रूप भी विस्तृत होने लगा। यह नहीं समझ लेना चाहिए कि बनारस के शास्त्रार्थ के पीछे एकदम कोई दशा परिवर्तन हो गयी। कार्य का क्षेत्र धीरे-धीरे बढ़ रहा था। बनारस के शास्त्रार्थ के कारण महर्षि जी की ख्याति सारे देश में फैल गई। देश की दशा से चिन्तित सुदूरवर्ती महानुभावों ने काशी के पण्डितों को पराजित करने वाले वावदूक के वृत्तान्त पढ़कर हृदय को ढांढस दिया। उधर कलकत्ता, मुम्बई आदि के पण्डितों पर महर्षि जी की धाक बंध गई। समाज सुधारक दयानन्द की सब ओर चर्चा होने लगी।

यश के विस्तार के साथ-साथ महर्षि जी का दृष्टिक्षेत्र भी विस्तृत होने लगा। अगले पांच सालों में हम समाज सुधारक के कार्य का फैलाव होता देखते हैं। इसके साथ ही धीरे-धीरे महर्षि जी का कार्य करने का ढंग बदलने लगा। केवल शास्त्रार्थ की या अपने डेरे पर प्रचार करने की पुरानी रीति को छोड़कर नियमपूर्वक सभाएं करने और उनमें व्याख्यान देने की पद्धति का अनुसरण होने लगा। महर्षि जी अब तक केवल संस्कृत में व्याख्यान देते थे; उसमें परिवर्तन हो गया। आप हिन्दी में व्याख्यान देने लगे। अब तक केवल कौपीन धारण किये रहते थे- आश्रम पर, सभा में, शास्त्रार्थ के समय इसी वेष में रहते थे। वह भी बदलने लगा। सभा में आप कपड़े पहनकर जाने लगे। इसी समय सत्यार्थ प्रकाश भी लिखा गया। इस प्रकार महर्षि जी का प्रचार का क्रम अवस्थाओं से परिवर्तित होने लगा। यह परिवर्तन कार्य को अधिक विस्तृत और लोकोपयोगी बनाने का साधन हुआ।

परिवर्तन एकदम नहीं हुआ; कार्य के फैलाव के कारण नए-नए उपायों का अवलम्बन आवश्यक होता गया। दौरे के प्रसंग में देश के कई अन्य सुधारक महानुभावों से मिलने का मौका मिला। उनके साथ विचार-विनिमय में कई नए विचार उठे, जो शीघ्र ही कार्य में परिणत हो गए। जिस समय का वृत्तान्त हम लिखने लगे हैं, वह सुधार की अन्तिम दशा के निर्माण का समय था। उसके अन्त में हम महर्षि दयानन्द को एक पूर्ण सुधारक के साथ-साथ एक भारी कार्य का केन्द्र बना हुआ पाएंगे। सुधार की अन्तिम दशा पर पहुंचकर महर्षि जी की कार्य शक्ति निर्माण के रूप में प्रकट होने लगी। यह विषय अगले परिच्छेदों का होगा। वर्तमान परिच्छेद में हम महर्षि जी के सुधार कार्य के फैलाव का वृत्तान्त लिखते हुए, उन सीढ़ियों की खोज करेंगे, जिनसे होकर कार्य का क्रम पूरी ऊंचाई तक पहुंचा।

बनारस से प्रयाग होते हुए महर्षि जी मिर्जापुर गए। मिर्जापुर में कई मास तक धर्म-प्रचार करके स्वामी जी फिर बनारस में पधारे। इस बार विशेष घटना यह हुई कि काशी नरेश ने अपने गत वर्ष के व्यवहार के लिए प्रायश्चित किया। नरेश ने स्वामी जी के दर्शनों की इच्छा प्रकट की और अनुमति पाकर अपनी गाड़ी भेज दी। महर्षि जी जब नियत स्थान पर पहुंचे तो महाराज ने खड़े होकर स्वागत किया, अन्दर ले जाकर स्वर्ण के सिंहासन पर बिठाया और अपने हाथों से महर्षि जी के गले में हार पहनाया।

- क्रमशः

पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित एवं 200वीं जयन्ती पर पुन:प्रकाशित जीवनी महर्षि दयानन्द से साभार पुस्तक प्राप्ति के लिए ऑनलाइन www.vedicprakashan.com पर अथवा 9540040339 पर आर्डर करें

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का राष्ट्रीय शिविर

रविवार 2 जून से रविवार 16 जून, 2024

स्थान : गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद (हरियाणा)

उद्घाटन : 2 जून - सायं 5 बजे समापन : 16 जून - सायं 4 बजे

जानकारी हेतु सम्पर्क करें- ***सत्यवीर आर्य, प्रधान संचालक, 9414789461***

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का

राष्ट्रीय वीरांगना प्रशिक्षण शिविर

रविवार 16 जून से मंगलवार 25 जून, 2024

स्थान : राजकीय कन्य विद्यालय, गंधरा, सांपला, रोहतक (हरि.)

जानकारी हेतु सम्पर्क करें- ***श्रीमती मृदुला चौहान, संचालिका, 9810702760***

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश

विशाल चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

रविवार 2 जून से रविवार 9 जून, 2024

स्थान : डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सैक्टर-7, रोहिणी, दिल्ली

उद्घाटन : 3 जून - सायं 5 बजे समापन : 9 जून- सायं 4 बजे

जानकारी हेतु सम्पर्क करें- **श्रीमती विभा आर्या, मन्त्राणी, 9873054398**

आर्य युवा संस्कार शिविर, पंचकुला
8 से 22 जून (लेवल-1)
7 से 12 जून (लेवल-2)
स्थान सीमित (30 सीट प्रत्येक)
सम्पर्क- ***बृहस्पति आर्य 9990232164***

आर्य युवती संस्कार शिविर, पंचकुला
13 से 17 जून (लेवल-1-2)
स्थान सीमित (30 सीट प्रत्येक)
सम्पर्क- ***श्रीमती शालिनी गुप्ता, 9810580195***

आर्य सन्देश के आजीवन सदस्यों की सेवा में
सदस्यगण अपना शुल्क भेजें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त आजीवन सदस्यों की सूचनार्थ निवेदन है कि आर्यसन्देश का आजीवन शुल्क 10 वर्ष के लिए होता है, किन्तु सभा की ओर से अभी किसी भी सदस्य की सदस्यता को निरस्त नहीं किया गया है। आर्यसन्देश साप्ताहिक आपका अपना पत्र है, जिसके सफल एवं निरन्तर प्रकाशन में आपका सहयोग सादर अपेक्षित है। अत: ऐसे समस्त सदस्यों, जिन्होंने 2014 से पूर्व आजीवन सदस्यता ग्रहण की हो वे अपना आगामी 10 वर्षीय शुल्क 1500/- रुपये भेजकर तत्काल अपनी आजीवन सदस्यता का नवीनीकरण तक करवा लेवें, जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें। आप अपना शुल्क सीधे निम्नांकित बैंक खाते में भी जमा करा सकते हैं- " Arya Sandesh Saptahik "

A/c No. 1098101002787 IFSC Code: CNRB0001098
Canara Bank, Parliament Street, New Delhi

कृपया शुल्क जमा कराने के उपरान्त डिपोजिट स्लिप/मैसेज का फोटो 9540040322 पर अवश्य भेजें- ***सम्पादक***

Continue From Last Issue : 21 April 2024

Fight Against the Garh (Strong Base)

He did not like misbehaviour of Kashi Naresh. He said to Naresh, "You have shown wrong behaviour by clapping. It is against the rules of the debete, Naresh put his hand behind Kotwal's back and started moving for ward." He said "You and we all are Idol worshippers. So, we should defeat our common enemy some how or the other." So understanding the meaning of what was said, the whole crowd started misbehaving. They threw stones, shoes and whatever they could find towards Swamiji. But all those things could not shake the strong and determined heart and mind of Swamiji.

Pauranik group lead the procession of Pandits thought out the city. They showed the proof of "Truth of Idol worship". They spread the news all around that Swamiji had been defeated. Pandits arranged to advertise on papers that no one should go to Swamiji. They declared that those who would go to him, they would be decleared as 'Sinners'. They could do whatever they could do to insult Swamiji but they could not misguide the world outside Kashi. The impartial newspapers of the country published the news of Swami ji's victory. 'Ruhelkhand' newspaper wrote down, 'Swami Dayanand has defeated the Pandits of Kashi'. 'Gyan Pradayni' of Lahore gave the news that there is no doubt that Pandits were unable to prove 'Idol worship' from Vedas. 'Hindu patriot' published that "Though Pandits were very proud of their 'knowledge of Shastras', but Swamiji defeated them."

The papers advertising about 'not contacting Swamiji' also proved to be unsuccessful.

The result was the more people started going to listen to Swamiji. Swamiji's name and fame spread all around. How could the ugly and naughty group of unwise Pandits defeat the most learned wise man like Swami Daya Nand? News of this debate spread all over the world like the wind. And along with it also let the world know about the Panditya of Swami Daya Nand.

To be Continue.....

With courtesy by the biography of "Maharshi Dayanand" re-published on the occasion of 200th birth anniversary and written by Pt. Indra Vidyavachaspati Ji.To buy online login www.vedicprakashan.com or contact 9540040339

पृष्ठ 3 का शेष

हमारी सन्तान ही - हमारी असली सम्पत्ति.....

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार जब बच्चे 8 साल के होते हैं तब उन्हें बहुत सुपरविज़न की ज़रूरत होती है। इस उम्र में हार्मोनल चेंज होते हैं। तब उनके मन में बहुत ज़्यादा उथल-पुथल चल रही होती है। इस उम्र में बच्चों के लिए एडजस्टमेंट का मामला होता है। ये इस उम्र में स्वतंत्रता चाहते हैं। अगर समय रहते बच्चों की काउंसलिंग नहीं की गई तो मुश्किलें हो सकती हैं। इस लिहाज से बच्चों से प्रतिदिन आधे एक घंटे बात करना बहुत ज़रूरी है। कौन सी चीज़ों पर बच्चा क्या रिएक्ट कर रहा है, इस पर नज़र रखें। डेढ़ से दो घंटे से ज्यादा दिन में फोन का इस्तेमाल न करने दें। मनोवैज्ञानिकों की एक रिसर्च के मुताबिक बच्चे 24 घंटे में औसतन आठ घंटे मोबाइल का इस्तेमाल करते हैं जो कि सबसे ज़्यादा नुकसानदायक है। बच्चे इस उम्र में सब कुछ ट्राई करना चाहते हैं।

असल में बच्चों के इस्तेमाल का फोन ही अलग होना चाहिए। उसमें केवल बच्चों की जरूरत के अनुसार ही एप्स हों। बच्चों के पढ़ने के लिए अच्छा साहित्य अपलोड हो। अब एक मशीनी युग आ गया है तो अगर इस पर ध्यान नहीं दिया तो ऐसी कई घटनाएं लगातार होती रहेंगी। अब संयुक्त परिवार ख़त्म हो गए हैं और घरों में कहानियां सुनाने वाले लोग ही नहीं बचे हैं, तो बच्चा किसी से तो कहानी सुनेगा ही। फिर भी इन परिस्थितियों में आप कुछ टिप्स का उपयोग आप कर सकते हैं—मोबाइल कि Femisafe जैसे एप्प इस विषय के लिए बहुत उपयोगी हैं।

मौलिक रूप से बच्चों को शिक्षा से लेकर सभी स्तरों पर यदि कामयाब करना है तो उसे लगातार विचलित करने वाली इस मोबाइल फोन की दुनिया से उम्र की एक अवधि तक दूर रखना होगा। भले ही आज समय बदल गया हो, लेकिन बच्चों के लिए परिवार का महत्त्व आज भी वही है जो पहले हुआ करता था। बच्चों के अंदर अच्छे मैनर्स और रिश्तों की समझ परिवार में रहकर के ही विकसित हो सकती है। लेकिन एक सच ये भी है कि बच्चे के विकास में परिवार के साथ और आस-पास के लोगों का भी बहुत योगदान रहता है। बच्चों के व्यवहार पर उनके माता-पिता का असर होता है। अगर अभिभावक बच्चों के सामने मोबाइल या टीवी में अधिक वक्त देते हैं तो बच्चा भी वैसा ही करेगा और आपके रोकने पर आपकी बात को नहीं समझेगा। इसलिए बच्चों के सामने अच्छा उदाहरण सेट करें, जैसा मेट्रो ट्रेन में बैठी वो महिला कर रही थी।

समाधान कुछ ऐसे भी किया जा सकता है। जैसे घर में अच्छी पुस्तकें जरूर रखें। प्रतिदिन बच्चों के साथ धर्म, देश और सोसाइटी में घटने वाली घटनाओं पर चर्चा जरूर करें। उनके मन को पढ़ें, उन्हें परिवार समाज के प्रति उनके कर्त्तव्य का बोध भी कराएं। उन्हें खुलकर बोलने का अवसर दें। उनकी बात ध्यान से सुनें, सही-गलत का बोध कराएँ। वरना भले ही बच्चा आपका हो किन्तु उसकी दिशा कोई और अपने ढंग से तय कर रहा होगा, आपके ढंग से नहीं।

सुझाव—हो सके तो दिन में एक समय का भोजन सारा परिवार एक साथ मिलकर करे और मोबाइल बंद करके ही भोजन या नाश्ता करे।

बचपन से अच्छी पुस्तकों को बच्चों के हाथों से ही खरीदवाएं। बच्चों के हर जन्मदिवस पर एक अच्छी पुस्तक खरीदने की आदत डालें। जन्म दिन जैसे अवसरों पर रिटर्न गिफ्ट में अच्छी पुस्तक भी साथ देने की परम्परा बनायें।

ध्यान रखें जब बच्चा परिवार से अच्छी चीजें नहीं सीखता तो फिर बाहर से कुछ गलत आदतें जरूर सीखता है।

जब किसी यात्रा पर जाएं जैसे शिमला, उदयपुर, ऊटी आदि तो कम से कम जो मोबाइल बंद किये जा सकते हैं, उन्हें अवश्य बन्द करके रखें। बच्चों के साथ घूमने जायें, मोबाइल के साथ नहीं। यात्रा के उस समय को केवल बच्चों के साथ बितायें। हालात ये हो गये हैं कि अगर सबने मोबाइल बंद कर भी लिए तो आपको समझ नहीं आएगा कि आखिर अब बात क्या करें! इसे कहते हैं निर्भरता। आहिस्ता-आहिस्ता पुरानी बातें, पुरानी यादें आएंगी उनको बच्चों से शेयर कीजिए, बच्चों से कुछ सुनिए, उन्हें कुछ सुनाइये, अन्ताक्षरी हम भूल चुके हैं, जोक्स सुनने-सुनाने भी हमारी निर्भरता मोबाइल पर ही बन चुकी है!

आइये, कोशिश करें, निकलें इस गुलामी से, परिवार के बीच मोबाइल फोन का प्रयोग सीमित करें। बार-बार मोबाइल खोलने का मन करेगा लेकिन दृढ़ रहें, मजबूत रहें, फिर जो बच्चों के साथ आनंद आना शुरू होगा वह आनंद असीम होगा—शानदार होगा।

लगेगा कि हम एक परिवार हैं, सब साथ हैं, बच्चों को खुद के सहारे रखिये मोबाइल के सहारे नहीं। मोबाइल टाइम की एक आदत डालें, जैसे—शाम को 8 या 9 बजे मोबाइल बंद रखेंगे। कुछ दिन में सबको पता लग जायेगा, विश्वास रखिये कोई दिक्कत नहीं होगी। शुरू में मोबाइल बन्द रखें और जरूरी लोगों को व्हाट्सएप पर मैसेज देने की बात कह सकते हैं। सब व्यवस्था बन जाएगी और अगर हम जरूरत समझते हैं तो।

बच्चों के मित्रों (फ्रेंड्स) को कभी-कभी पर पर जरूर बुलवाएं, उनसे और उनके माता-पिता से बात करें, उनसे परिवार जैसे सम्बन्ध बनायें। इसके अलावा बच्चों के साथ सप्ताह में एक दिन पार्क या खेतों में जरूर जाएँ।

प्रेरक महापुरुषों के चित्र-फोटो घर पर जरूर लगायें। यह एक महत्त्वपूर्ण विकल्प है, इसको छोटा बच्चा न समझें, बचपन से ही बच्चों के मन पर उनकी छाया अंकित हो जाती है, जब गर्भावस्था के 8 या 9 महीने के दौरान कमरे में लगे चित्र की छाप पैदा होने वाले बच्चे में समा जाती है तो सालों-साल घरों में लगी बेहतर तस्वीरों की छाप उसके मन पर क्यों नहीं बैठेगी ?

याद रखिये हमारे बच्चे ही हमारी वास्तविक सम्पत्ति है, इनको बेहतर तरीके से सम्भालना चाहिए जितना समय धन कमाने या बचाने उसे बढ़ाने में लगाते हैं, उतना ही समय इस वास्तविक सम्पत्ति की रक्षा में भी लगायें, ताकि आप सच्चे मार्गदर्शक कहलायें।

ध्यान देवें असली सम्पत्ति आपका परिवार है ये ही आपका समाज और ये ही राष्ट्र है, अगर कुछ भी चूक होती है तो फिर बाद में जमाने को, समाज को, सरकारों को दोष देने की भूल कम से कम मत करना...।

साभार : चुनौतियों का चिन्तन

पृष्ठ 2 का शेष

ने अग्नि को माध्यम बनाकर यज्ञ की विद्याओं द्वारा पर्यावरण संरक्षण एवं पर्यावरण को शुद्ध करने के लिए मानव को वेद के माध्यम से सचेत किया है। अग्नि में दी हुई आहुति वायुमण्डल में व्याप्त रोगाणुओं, विषाणुओं को दूर करती है। अग्नि सूक्त में अग्नि के लिए प्रार्थना की गयी है- हे अग्ने! श्रद्धा, प्रज्ञा, यश, विद्या, बुद्धि बल, लक्ष्मी, दीर्घायु तेज ओज, एवं आरोग्यता प्रदान कर हमारा कल्याण करें। अग्नि में यज्ञ करने से वेद में यज्ञ द्वारा जल प्राप्त करने की बात कही गयी है। यज्ञ से ही पर्यावरण सन्तुलन के लिए वर्षा होती है। वर्षा से अन्न उत्पन्न होता है तथा अन्न से प्राणियों की रक्षा होती है। अत: यज्ञ कर्म परम आवश्यक है और यज्ञ अग्नि के बिना सम्भव नहीं है। इसलिए पर्यावरण की रक्षा के लिए अग्नि तत्व की परम प्रधानता है।

इसी तरह वायु का पर्यावरण तथा हमारे जीवन में घनिष्ठ सम्बन्ध है। क्योंकि वायु द्वारा ही श्वास-प्रश्वास की क्रिया सम्भव होती है। ऋग्वेद में प्राण वायु के लिए 'विश्वभेशज' शब्द का प्रयोग किया है। मन्त्रों में दूषित वायु को दूर कर शुद्ध वायु प्रवाहित करने की कामना की गयी है। वैदिक ऋषियों को यह भलीभाँति पता था कि शुद्ध वायु हृदय के लिए शान्तिदायक सुख कारक एवं आयुवर्द्धक है।

आज यह बात सब जानते हैं कि फैक्ट्रियों से निकले धुँए से वातावरण दूषित होता है। इसमें वायु मण्डल में ऑक्सीजन की कमी होकर वह कार्बन से युक्त गैस जैसे कार्बनडाई ऑक्साइड से युक्त होकर ढक जाता है। इसके लिए वेद ने प्रत्येक गृहस्थ को वायु को शुद्ध एवं स्वच्छ बनाने के लिए प्रेरित किया है कि प्रत्येक गृहस्थ को यज्ञ करना चाहिए। यज्ञ क्रिया के द्वारा प्रयुक्त शाकल्य (घृत, जड़ी, बूटियाँ, औषधियां तिल आदि) से प्रचुर मात्रा में ऐसी गैसें निकलती हैं। जो वायुमण्डल में फैली प्रदूषित वायु को दूर कर शुद्ध वायु का प्रसार करती है। इनमें सबसे महत्वपूर्ण ऑक्सीजन गैस है। वायुमंडल में जब ऑक्सीजन की कमी होती है तभी वायुमण्डल प्रदूषित होता है। इसलिए वेद में शुद्ध वायु को भी देवता कहकर प्रणाम किया गया है कि आप शुद्ध रूप से प्रवाहित होकर हमारा कल्याण करें।

इसी तरह पर्यावरण संरक्षण में आकाश की भूमिका भी सराहनीय है। पर्यावरण की रक्षा के लिए आकाश में व्याप्त ओजोन परत की रक्षा होना परम आवश्यक है। तथा आकाश में व्याप्त गैंसों के अनुपात में सन्तुलन भी आवश्यक है। इनके असन्तुलन से पर्यावरण प्रदूषित होने लगता है। आधुनिक समय में भूमण्डल पर वाहनों उद्योगों से निकलने वाली असहनीय ध्वनि सम्पूर्ण आकाश में व्याप्त होकर आकाश में असन्तुलन पैदा करती है। जिसे ध्वनि प्रदूषण कहा जा सकता है। प्राचीन वैदिक ऋषि ध्वनि प्रदूषण के लिए भी सजग थे। इसलिए वैदिक शान्तिपाठ में पर्यावरण को सुरक्षित कर सुखमय एवं शान्तिमय जीवन जीने की बात कही है।

द्यौ: शान्तिरन्तरिक्षँ शान्ति: पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधय: शान्ति:। वनस्पतय: शान्तिर्वश्वेदेवा: शान्तिब्रह्म शान्ति: सर्वँ शान्ति: शान्तिरेव शान्ति: सामा शान्तिरेधि।।

यह सब जानने के बाद हम यह कह सकते हैं कि पर्यावरण को प्रदूषण से मुक्त करने के लिए हमें एक बार पुन: वेदों की शरण में जाना होगा। वेद तक पुन: लौटना होगा, आधुनिकीकरण के इस युग में मानव अपने अस्तित्व को भूल चुका है, मानव का अस्तित्व वेद से है। वेद ही ईश्वरीय वाणी है तथा पर्यावरण संरक्षण की बात वेद ने ही हमारे समक्ष सबसे पहले रखी थी। आओ वेदों के अनुसार चलकर पुन: ग्लोबल वार्मिंग की इस लड़ाई को लड़ें।

- सम्पादक

केरल जो कभी वैदिक धर्म का केन्द्र था, वहां गत 100 वर्षों में क्या-क्या घटित हुआ, उन सत्य घटनाओं पर आधारित वीर सावरकर जी का प्रामाणिक उपन्यास अवश्य पढ़ें।

'मोपला'

प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-
वैदिक प्रकाशन
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष: 23360150, 9540040339

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 27 मई, 2024 से रविवार 2 जून, 2024

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं. डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2024-25-2026

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 30-31/05-01/06/2024 (वीर-शुक्र-शनिवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2024-25-26

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 29 मई, 2024

आर्थिक रूप से कमजोर बारहवीं पास छात्रों के आगे की पढ़ाई के लिए छात्रवृति योजना

आर्य प्रगति छात्रवृत्ति परीक्षा 2024

- पात्रता: आवेदन प्राप्ति की अंतिम तिथि तक बारहवीं कक्षा या समकक्ष कक्षा में उत्तीर्ण होना अनिवार्य है।
- आयु सीमा: आवदेन की अंतिम तिथि तक 16 से 25 वर्ष ।
- छात्रवृत्ति हेतु अभ्यर्थियों का लिखित परीक्षा एवं साक्षात्कार के आधार पर चयन किया जाएगा।
- पात्रता परीक्षा ऑनलाइन वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के माध्यम से ली जाएगी।
- पात्रता परीक्षा का विषय सामान्य ज्ञान और रिजनिंग पर आधारित होगा।

आवेदन की अंतिम तिथि 15 जुलाई 2024

ऑनलाइन परीक्षा तिथि 21 जुलाई 2024 11:00 AM IST

आवेदन करने के लिए वेबसाइट www.aryapragati.com

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:

9311721172

E-mail: dss.pratibha@gmail.com

प्रतिष्ठा में,

शोक समाचार

आर्य उप प्रतिनिधि सभा कोटा के प्रधान श्री अर्जुन देव चड्डा जी का निधन

आर्य उप प्रतिनिधि सभा कोटा सम्भाग (राजस्थान) के प्रधान, सार्वदेशिक सभा के पूर्व विशेष आमन्त्रित सदस्य, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रकल्प वैवाहिक परिचय सम्मेलन के राष्ट्रीय संयोजक तथा अनेक योजनाओं में सहयोगी, मूक पशु-पक्षियों की सेवा एवं सभी को प्रेरणा देने वाले श्री अर्जुन देव चड्डा जी का दिनांक 28 मई, 2024 को लगभग 80 वर्ष की आयु में अकस्मात निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 29 मई को किशोरपुरा मुक्तिधाम कोटा पूर्ण वैदिक रीति से किया गया जिसमें सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री सतीश चड्डा सहित कोटा एवं अन्य जिलों व प्रदेशों की संस्थाओं के अधिकारियों, सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। वे अपने पीछे दो सुपुत्रों एवं एक सुपुत्री का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त बपरिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्प्लेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह